आदिवासी साहित्य विमर्श

संपादक
डॉ. मोहन चव्हाण

सहसंपादक
डॉ. विजयप्रसाद अवस्थी
प्रा. गणेश शेकोकार
प्रा. संतोष पगार
प्रा. राकेश वळवी

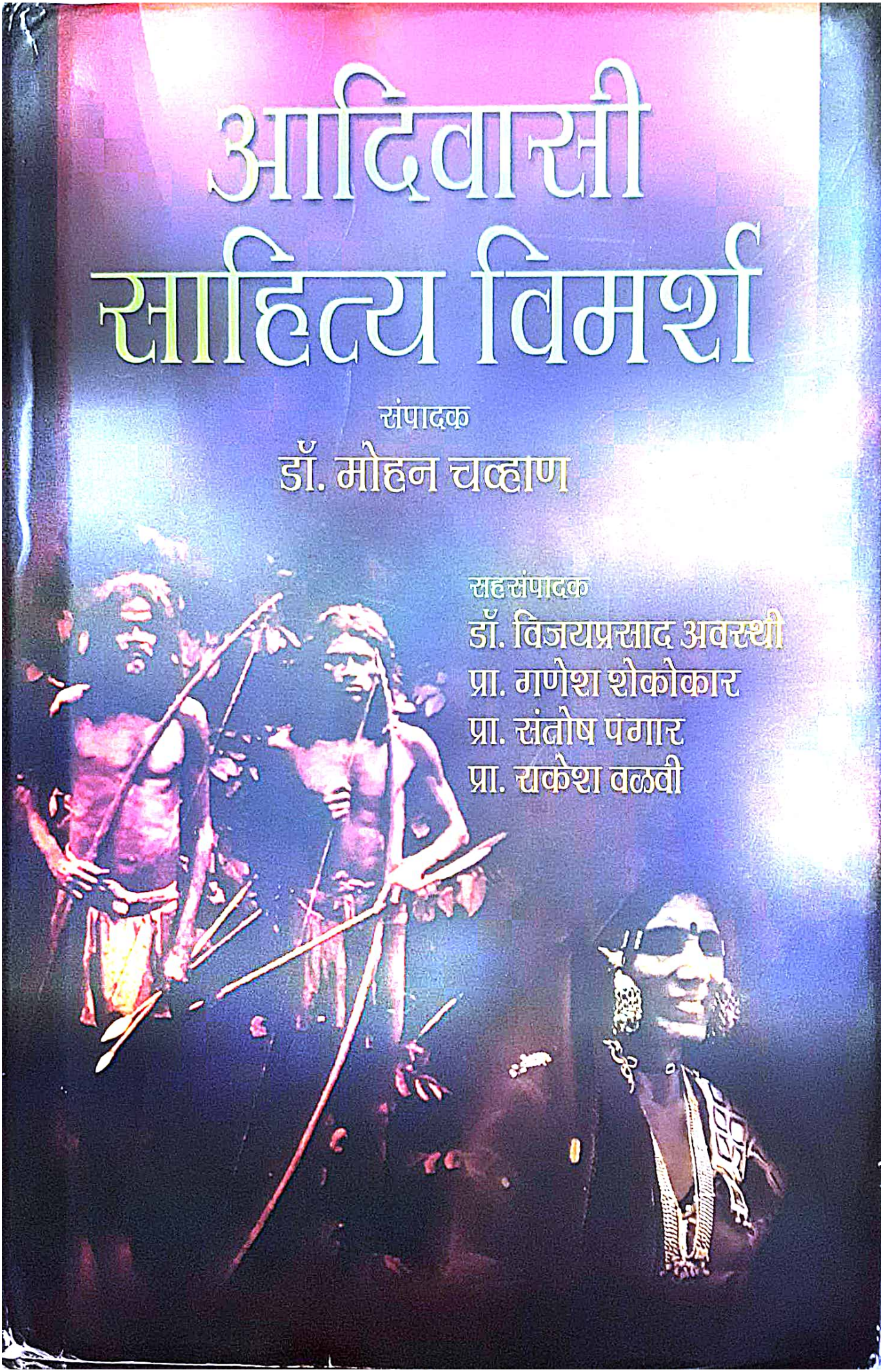

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। सर्वाधिकार मूल रचनाकारों के पास सुरक्षित है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN 978-93-86835-65-9

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 800 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

AADIVASI SAHITYA VIMARSH—Collection of essays on Aadivasi Discourse *edited by* Prof. Mohan Chavhan

अनुक्रम

सम्पादकीय *9*

!! शुभ संदेश !! *11*

1. आदिवासी साहित्य का उभरता परिदृश्य 13
   महादेव टोप्पो
2. आदिवासी भाषा और हिन्दी 22
   डॉ. जोराम यालाम
3. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन एवं संस्कृति का विहंगावलोकन 28
   डॉ. एन. एस. परमार
4. बनजारा जनजाति की बोली-बनजारा बोली-भाषा की परिमार्जनशीलता 40
   डॉ. मोहन लक्ष्मणराव चव्हाण
5. आदिवासी समाज के विकास में कानून और जन-संगठनों की भूमिका 45
   डॉ. गणेश द. शेकोकार
6. संजीव के "जंगल जहाँ से शुरू होता है" उपन्यास में आदिवासी-विमर्श 50
   डॉ. शिवाजी सांगोळे
7. शंकर शेष के 'पोस्टर' नाटक में चित्रित आदिवासी-विमर्श 54
   प्रा. डॉ. मुनेश्वर एस. एल.
8. खण्ड काव्य शबरी में आदिवासी-विमर्श 59
   डॉ. कोयल विश्वास
9. समकालीन आदिवासी-विमर्श 62
   डॉ. सविता टांक
10. आदिवासी चिन्तन और हिन्दी उपन्यास-साहित्य 65
    डॉ. शेख अफरोज फातेमा

26. माध्यमों को आदिवासियों की ओर जाना चाहिए 149
प्रा. रमेश शेजवळ

27. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन 155
संगीता रामनाथ देशमुख

28. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी-विमर्श 160
प्रा. गातवे युवराज शामराव

29. जख़्म महसूस किए जाते हैं, पढ़े या सीखे नहीं जाते! 163
प्रा. शांताराम वळवी

30. समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी-विमर्श 170
प्रा. पटेकर विश्वनाथ चन्द्रकान्त

31. हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी-विमर्श 175
निलेश एस. पाटील

32. हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी साहित्य 178
डॉ. मछिन्द्र पाटिलबा उगले

33. हिन्दी उपन्यास साहित्य में आदिवासी-विमर्श 181
प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव

34. समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी जीवन 185
डॉ. अश्विनी कुमार चिचोंलीकर

35. 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास का भाषा और शैलीगत अध्ययन 188
डॉ. अशोक पवार

36. हिन्दी कथा-साहित्य में आदिवासी-विमर्श 193
डॉ. जाधव अर्जुन रतन

37. 'धार' उपन्यास में आदिवासी-विमर्श 197
डॉ. अनिता भीमराव काकड़े

38. 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में आदिवासी-विमर्श 202
प्रा. मंगला पांडुरंग भँवर

39. हिन्दी काव्य में आदिवासी शबरी का चारित्रांकन 207
डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी

40. 'बेघर सपने' : संथाल परिवेशों की ज़िन्दा तस्वीर 211
विद्या ए.एस.

हिन्दी काव्य में आदिवासी शबरी का चारित्रांकन

डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी

आज के प्रगतीशील युग में शबरी का आख्यान जितना प्रासंगिक एवं सन्दर्भानुकूल है उतना रामकाव्य के गौण पात्रों में किसी अन्य का नहीं। यही वह पात्र है जिसके चरित्र ने हिन्दू समाज की सहिष्णुता और उदारता का साक्षात्कार कराया है। वैसे भी सम्पूर्ण राम-काव्य सामाजिक चेतना के प्रमुख एवं प्रबुद्ध स्वरों से परिपूर्ण है। समूची राम-कथा सामाजिक धरातल के यथार्थ से जुड़ी हुई है। शबरी, अहल्या, केवट आदि पात्र इसके प्रमाण हैं। वस्तुतः रामकथा अपने समय के आगे बढ़कर प्रगतिशील सामाजिक चेतना की वाहक बन गई है। बुन्देली लोकगीतों में तो यहाँ तक आया है कि राम ने तो बड़े प्रेम से जूठे बेर खा लिये थे, किन्तु लक्ष्मन ने उसका निरादर कर दिया। वे ही बेर धौलगिरी पर्वत पर संजीवनी बूटी बनकर उत्पन्न हुए और उन्होंने मेघनाद की शक्ति प्रहार से लक्ष्मन की अचेत अवस्था में उसकी प्राण रक्षा की।

"एवमुक्ता महाभागैस्तदाहं पुरुषर्षभ।
मया तू संचीत वन्य विविध पुरुषर्षभ।।
तवार्थे पुरुषव्याघ्र पम्पायास्तीरसम्भवम।"

अर्थात "पुरुषवर! उन महाभाग महात्माओं ने मुझसे उस समय ऐसी बात कही थी। अतः पुरुषसिंह! मैंने आपके लिए पम्पा तट पर उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के जंगली फल-मूलों का संचय किया है।" अतः शबरी ने श्रीराम से कहा था कि 'आपका दर्शन मिलने से आज मेरी पूजा सार्थक हो गई और मुझे अब आपके दिव्यधाम की प्राप्ति भी होगी।" शबरी के गुरु ने बताया भी था कि श्रीराम तथा लक्ष्मण का आतिथ्य-सत्कार करने पर इसे अक्षय लोक प्राप्त होगा। वाल्मिकी रामायण में शबरी का चरित्र-चित्रण अरण्य कांड में किया गया है। वह तपोनिष्ठा नारी है। रामायण में शबरी का चरित्र गौण रूप में आया है। वह आतिथ्य-सत्कार एवं सीता की खोज करते समय राम को मार्ग बताने का काम करती है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्यों में शबरी का चरित्र-चित्रण रामायण के अनुरूप ही हुआ है। नरेश मेहता ने अपने खंडकाव्य में शबरी को महत्त्व देकर स्वतन्त्र रूप में उसे प्रस्तुत किया है।

शबरी की भक्ति-भावना

नरेश मेहता ने समाज में निम्न समझे जाने वाले वर्ग के उत्थान के लिए 'शबरी' काव्य लिखा है। कवि ने स्पष्ट करना चाहा है कि भक्ति-भावना की अपेक्षा आज के युग में आत्मिक संघर्ष एवं श्रम अधिक अपेक्षित है। शबरी का सामाजिक व्यक्तित्व पूर्णतया झलक दिखाता है कि वह अपनी वर्ग-चेतना के साथ-साथ आत्मचेतना एवं बौद्धिक स्तर पर भी प्रखर है। शबरी मतंग ऋषि से स्पष्ट एवं सार्थक शब्दों में कहती है–

"मैं समझी प्रभु है अग्निरूप, सब सांसारिकता से ऊपर।
अन्त्यज भी हो जाते पावन जिनकी पवित्रता को छूकर।।"

शबरी अनेक सन्त नरों की तरह ही आजीवन कौमार्य-व्रत धारण करती है। गुरु मतंग की वह शिष्य होने का ही सौभाग्य नहीं प्राप्त करती, अपितु अस्पृश्य होने के कलंक से भी बच जाती है–

"सभी समान जन्म से होते, / द्विज बनते नीज कर्म महत से।"

विद्रोही नारी

'शबरी' के प्रणेता रत्नचन्द्र शर्मा ने शबरी के चरित्र को परम्परा और कल्पना के मेल से मौलिकता प्रदान की है। वह एक सुन्दर युवती है। करुणा उसके हृदय में इस कदर समाहित है कि अपने विवाह में बलि के लिए आई हुई भेड़ों को देखकर उसका हृदय विद्रोह कर उठता है।

"इतने जीवों की हत्या से, इक कन्या का परिणय होगा,
इतने प्राणों की बलियों से, बाला का भाग्य हरा होगा।"

शबरी की मानव-सेवा

नरेश मेहता ने शबरी की 'जन्मगत' निम्नवर्गीयता को कर्म दृष्टि के द्वारा वैचारिक ऊर्ध्वता में परिणत करने का प्रसंग प्रस्तुत किया है। शबरी आश्रम के कार्यों को सक्रियता एवं श्रमपूर्वक निभाती है। शबरी की भक्ति सीमित नहीं बल्कि व्यापक है, जिसके कारण वह मानव-प्रकृति और प्रभु के दर्शन करती है। वर्ण विद्वेषियों के द्वारा उसे मानसिक तथा शारीरिक यातानाएँ सहनी पड़ती हैं; किन्तु उसका तेज और स्वरूप निरन्तर विकसित होता है। उसके विरुद्ध अत्यन्त उग्र वातावरण है; किन्तु इसी बीच राम का आगमन उसकी मानव-सेवा और तप-गाथा पर प्रामाणिकता की छाप अंकित कर देता है–

"शबरी अन्त्यज है तो क्या, वह भक्ती रूप है शूद्रा,
है तेज रूप वह केवल, शिव-शक्ती रूप है शूद्र।"

श्री नारायण चौबे ने शबरी द्वारा राम को दिए गए जूठे बेरों को मधुर कहकर अस्पृश्यता के विरुद्ध उनके प्रेम अभियान को मानव-सेवा का प्रतीक बताया है, तो लक्ष्मण के आर्य संस्कारों को जबर्दस्त झटका देकर स्वातन्त्र्योत्तर काव्य में कवि ने अपनी आधुनिक मनीषा को आन्दोलित किया है–

"...नारी वह अन्त्यज की, / प्रतिभा जो छू न सकी,
राम पुरुषोत्तम को जूठा खिलाती है...।"
किन्तु "राम रस डूब रहे प्रेम रस बहता है,/ बहती है पाँत, ऊँच-नीच बहता है।"

श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' की नायिका का नाम श्रमणा है। श्रमणा का अर्थ है संन्यासिनी। नायिका को स्वयं अपने इस नाम पर आश्चर्य होता है–

"पता नहीं किस साधु ने / यह नाम दिया था श्रमणा
भला शबर लड़की को होता / नाम कभी भी श्रमणा?"

सुसंस्कारित नारी एवं साधना की मूर्ति

शबरी एक सुसंस्कारित नारी है। भारतीय परम्पराओं का खयाल रखती है। वह प्रातः ब्रह्म बेला में ही उठकर स्नान-ध्यान करके कुश-फूल आदि चुनने जाती है। सूर्योदय से पहले ही वह गुरु की गौशाला में पहुँचकर गायों को दाना-पानी देकर गायें दुहती रहती है। फिर वह ताजे गोबर से आँगन लीपती है। धूप निकलने पर वह धान धूप में डालती है। कूटना-पीसना सब उसी के जिम्मे था। यहाँ तक कि प्रत्येक बटुक की आवश्यकताओं का वह खयाल रखती है। आश्रम की नित्य सफाई की जिम्मेदारी उसी की थी। कामों में ही उसका दिन बीत जाता है।

पशु-पक्षियों से उसे बेहद स्नेह था। पशु-पक्षी भी उसे बहुत मानते थे। मृग-छौने उसके आँचल में मुँह छिपाए घूमते रहते थे। पिंजरों में मौन पड़े तोता-मैना शबरी को देखते ही शोर मचाने लगते हैं। आश्रम की दीया-बत्ती करके शाम को अपने घर लौटती है। उसकी सारी रातें प्रभु के मनुहार में एवं नामों में बीत जाती है। उसकी अटूट साधना को देखकर गुरु भी चकित हो जाते हैं।

"कैसे शिष्या से अब यह / थी भक्त अब रही प्रतिदिन
कोई क्या गुरु हो सकता / इसका, जो प्रभु को अर्पण।"
मन्दार पुष्प-सा जिसका / सर्वस्व समर्पित प्रभु को,
जो स्वयं तपस्या है अब / क्या वेद-मन्त्र है उसको।"

श्रवण और कीर्तन का महत्त्व शबरी के माध्यम से यथास्थान कवियों ने अभिव्यक्त किया है। प्रभु का नाम एवं ऋषि-मुनियों के मुख से श्रवण करने से मुक्ति वर्णित है–

"प्रभु मुख से श्री मुख से, प्रवचन सुन यह भवसागर तक जाऊँगी।"

शबरी के चरित्र के उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि रामायण में शबरी का स्थान गौण रूप में है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्यों में शबरी के चरित्र को नरेश मेहता ने भक्ति के साथ अंकित करते हुए उसे नारी-गौरव प्रदान कर दिया है। वह वर्ण-द्वेष के उद्वेलित सागर में सेतु बनती है। वह राष्ट्रीय एकता, सामाजिकता, समानता, पशु-पक्षियों का प्रेम, भारतीय संस्कृति आदि को उजागर करती हुई मानव-समाज को एक नया सन्देश देती है। 'शबरी' खंडकाव्य में नरेश मेहता ने रामायण की इस उपेक्षित नारी को नायिका बनाया है। इस काव्य में मानवता एवं भक्ति, संस्कृति का उज्ज्वल प्रतीक बनकर आई है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि आलोच्य कवियों ने गुरु भक्ति का उच्चादर्श, वर्तमान युग के शोषित निम्न वर्ग के प्रतिनिधि तथा मानवतावादी दृष्टिकोण रखने वाली आदर्शवादी नायिका के रूप में उसे अंकित किया है। शबरी को नायिका के पद पर प्रतिष्ठित करना आलोच्य कवियों की नयी उपलब्धि है।

सन्दर्भ

1. शबरी- शंकर शेष
2. रामायण – वाल्मिकी
3. कैकयी – चाँदमल अग्रवाल